Golden Research Thoughts
Vol -1 , ISSUE –1, July - 2011
ISSN:- 2231-5063

ORIGINAL ARTICLE

पहाडी आंचल

दिलीप कोंडीबा कसबे

हिंदी विभाग, विज्ञान महाविद्यालय, सांगोला .

सारांश **:**

पहाडी आंचलिकता की संकल्पना –

भारतीय भूखंड के विभिन्नताके अनुसार आँचलिकता के कई प्रकार निर्माण हुए, जैसे पहाडी इलाको, सागर तटीय इलाकों, मैदानी प्रदेशों, रेगिस्थानांचल, देहातों, वनों, पर्वतीय इलाकों आदि को किसी देश का आंचल माना जा सकता है। साथ ही महानगरों, उसके निकटवर्ती कस्बों, झोपडियों, सर्वहारा मजदूरों, अवैध धंधो से सम्बंधित विशिष्ट जन जातियों की बस्तियों को भी आंचल कहा जा सकता है।

प्रस्तावना :

आंचलिकता उन्नीसवी सदी की उपलब्धि मानी जाती है। उक्त विभिन्न आंचलों पर लिखे हुए कहानियों ने अपने–अपने आंचल के अनुसार नाम धारण किये है, जैसे –ग्रामांचल, नागरांचल, नदी आंचल, बस्ती आंचल, पहाडी आंचल, सागर आंचल आदि है । हिंदी के आंचलिक कहानियों की चर्चा – परिचर्या में अक्सर क्षेत्र विशेष का प्रश्न भी उठाया जा सकता है। ''कुछ विद्वान ग्रामांचल को ही आंचलिकता मानते है और कुछ ने नगरांचल तक ही आंचलिकता को सीमित कर दिया है।''[१] यहाँ यह स्पष्ट है हिंदी आंचलिक साहित्य एक विशिष्ट रुप धारण कर चुका है।

'पहाडी आंचलिकता' यह एक आंचलिकता का अंग है। भारतीय भू–भाग की विभिन्नता का एक अंग पहाडी इलाका है, जो आज भी पिछडा, अधूरा है। यहाँ के लोग बरसो पुरानी, पारंपारीक और सबसे अधिक मूल्यवान जीवन पध्दती से चिपके हुए है। वे ऐसी जीवन पध्दति को नहीं छोडना चाहते । ऐसे लोगों के अंतर्बाहय जीवनविश्व को तलाशने का काम पहाडी आंचलिकता ने किया है। पहाडी भू–भाग को विशिष्ट प्रदेश मानकर वहाँ रहनेवाली जन जातियों का चित्रण करना ही 'पहाडी आंचलिकता' है। इसका आधार पहाडी जन जीवन ही है । सच्ची आंचलिक कहानी वहीं होती है, जिसमें पात्रों के निर्माण में प्रकृति सहयोग देती रहती है, उसमें लोक जीवन का चित्रण संवेदनाक्षम होता है।

स्वतंत्र भारत का बाईस प्रतिशत भू–भाग पहाडों से और जंगलों से घिरा हुआ है। इस पहाडी भू–भाग में बसी हुयी ४१४ से भी अधिक जन जातियाँ है, जो अब तक सही अर्थ में विकास योजनाओं से काफी दूर रही है। विकास की सुविधाओं से दूर रही ये जन जातियाँ किस तरह का जीवनयापन सह रही है, इसका मार्मिक चित्रण 'पहाडी आंचलिक' रचनाओं में देखने मिलता है। पहाडी भू–भाग को केंद्र में रखकर वहाँ रहनेवाली विशिष्ट जनजाति का रेखांकन करना 'पहाडी आंचलिक' की विशेषता है। भारत में छत्तीसगड आंचल, अलमोडा आंचल, मुक्तेश्वर पहाड, अरवली पहाड,

सेलना पहाड, खासंगदा पहाड आंचल आदि अनेक पहाडी आंचल है। इन पहाडी आंचलों में भील, गोंड, नागा, ठाकुर, कोली, पारधी, नट, करनट, पगवळ, जमलिया आदि जन जातियाँ निवास करती है।

पहाडी जन जातियों का कष्टप्रद जीवन, सरकारी अधिकारियों द्वारा उनका होनेवाला दमन, उनका जीवन दृष्टिकोन उनकी देवी–देवता संबंधी मान्यता, पशु–पंछी, उनके उदयोग धंदे, अंधविश्वास, उनकी रुढि–प्रथा, उनके शोषण, नारी की स्थिति–गति, विद्रोह, पारिवारिक जीवन पध्दति, सामूहिकता, संस्कृति, विदेशियों का प्रभाव, धर्म परिवर्तन, भौतिक सुविधाओं का अभाव आदि का चित्रण पहाडी आंचलिकता में होने लगा है। एक विशिष्ट पहाडी आंचल को खडा करके वहाँ के जन जीवन पर हिंदी के स्वातंत्र्योत्तर कथाकारों ने जो सुक्ष्मता और प्रगल्भता दिखाई है वह प्रशंसनीय लगती है।

* पहाडी आंचलिकता के तत्व –

वैसे देखा जाए तो पहाडी आंचलिकता के तत्व अन्य आंचलिकत तत्वों की तरह ही रहते है। इन कहानीकारों के लेखकों का हेतु वहाँ की संस्कृति, वहाँ का लोकजीवन, वहाँ की बोली, वहाँ के अंधविश्वास, अज्ञान, रीति–रिवाज, उत्सव पर्व, नाच–गान आदि के विशिष्ट पहलूओं को पाठकों के सामने रखने का रहता है।

साधारणतः पहाडी आंचलिकता के तीन तत्व मानते है ।

१) विशेष पहाडी भूखंड आंचल ।
२) पहाडी आंचल का सर्वांग परिपूर्ण चित्रण ।
३) पहाडी आंचल विषयक वस्तुन्मुखी दृष्टिकोण ।

किंतु ऐसे ही एक विद्वान ने आंचलिकता के निम्न जैसे तत्व माने है –

''१) किसी आंचल विशेष की प्राकृतिक स्थिति एवं सुषमा का अंकन ।
२) कथा का आधार वही आंचल –विशेष जिसमें स्थानिक लोक कथाओं का समावेश है ।
३) स्थानिय लोक संस्कृति का वैविध्यपूर्ण चित्रण ।
४) सभी प्रकार की स्थितियों का पूर्ण चित्रण ।
५) स्थानिक बोली का संतुलित एवं स्वाभाविक प्रयोग ।
६) आंचल में उठती नवीन जनचेतना का दृष्टिकोण की संकीर्णता से रहित प्रभावपूर्ण अंकन ।''[२] यहाँ शंशुनाथ सिंह ने भी आंचलिकता की व्याख्या दो भागो में विभाजीत इस प्रकार की है – '' आंचलिक संस्पर्श (रीजनल टच) और आंचलिक प्रवृत्ति (रिजनलिज्म)''[३] यहाँ स्पष्ट है उपर्युक्त सभी आंचलिक तत्वों का समाहार पहाडी आंचलिकता में हुआ है।

* रांगेय राघव की कहानी में पहाडी आंचल –

जिस प्रकार कई कथा साहित्यकारों के साहित्य में काफी मात्रा में पहाडी आंचल का दर्शन होता है उसी प्रकार डॉ. रांगेय राघव के कहानी साहित्य में खास ऐसे पहाडी आंचलक का दर्शन नहीं है। उनकी एक मात्र 'अंगारे न बुझे' कहानी में पहाडी आंचल का दर्शन है और अन्य कई रचनाओं द्वारा पहाडी आंचल के जो संकेत मात्र है ।

'अंगारे न बुझे' कहानी में पहाडी आंचल है । इस कहानी का कथा केंद्र 'वैर' गाँव है– ''गाँवों के घरों का धुवाँ अब छप्परों से निकल–निकल कर धूल भरे रास्तों पर छाया–सी करता हुआ आसमान की ओर चल पडा । कहीं–कहीं धूल के स्थान पर हलकी–सी कींच भी हो गई थी! नाला बहने लगा था । और पाणी बरस ने के बाद किल्ले पर लाल छाया मुझे घर भी ले जाओ तो तुम्हारे घर के लोग मुझे नहीं रहने देंगे । समझे? मैं कोई बेडनी नहीं हूँ। मुझे छोडकर बिछियाँ को ही रानी क्यों नहीं बना लेते ? तुम्हारे यहाँ तो धूप,हवा,पानी और औरत को कभी छूत नहीं लगती । '' [४] स्पष्ट है लेखक ने स्थान, भीतरी व्यथाओं द्वारा यहाँ के आंचलिकता को उजागर किया है।

' अंगारे न बुझे ' कहानी के लोहपीटे अपने आप को क्षत्रिय मानते है। उनकी दृष्टि में जाट नीच जाति के है। मैना को जाट चौधरी के बेटे कंचन के साथ घर बसाना उन्हें स्वीकार नहीं है। अतः वृध्द जाधव मैना के गालों को गर्म लोहे से दाग देता है। इसके बाद वृध्द जाधव मैना तथा उसके माँ के सम्मुख अपनी मनोभावना व्यक्त करता है – '' मैने उसे जिगर के टुकडे की तरह पाला था । पर वह तो दुनिया को नही समझती है। हम कोई कंजरों की तरह नहीं है। भूखा रहने पर भी शेर घास नहीं खाता । मैना की माँ इन हाथों ने ही बच्ची को जलाया था, इन्हें सजा मिलनी चाहिए थी । मेरे मन ने पाप नहीं किया, हाथों ने जरुर किया था... । ''

माँ की आँखे हर्ष से भीग गई थी, किंतु मैना की आँखों में उसी गर्व, उसी मरजाद, उसे आन और शान के अंगारे जल उठे उजाला बनकर तैरने लगी ! अनेक वर्षों का यह किल्ला जिसके खंड हरों में से मोटी–मोटी दीवारें झाँकती दिखाई देती । इस समय अत्यंत स्वच्छ और सुंदर प्रतीत रहा था ।... इमली के उस भूतोंवाले पेड की छाया में एक बडे पत्थर के ऊपर, जहाँ से डुबते सुरज की अंतिम किरणे अभी तक दिखाई देती थी, मैना बैठी थी । '' [५] स्पष्ट है लेखक ने उनकी जन जाति लोहपीटों के परंपरागत जीवन का यथार्थ रुप से चित्रण किया है।

डॉ. रांगेय राघव ने 'सारनाथ के खंडहरों में' इस कहानी में पहाडी आंचल के द्वारा मुर्तिकार की जीवन की चरम आसक्ती को रुपायित किया गया है। मनुष्य अपने मनुष्यत्व को पैरोतले कुचल ने को तैयार होना और गौतम बुध्द की मूर्ति बनाकर उसे बंदिस्त बनाना जन जातियों के लिए अव्यवहार्य बताता है। ''पहाडों के सामने खडे हुए यात्री, यदि तू नहीं है तो पहाड तेरे लिए नहीं है, किंतु पहाड तो फिर भी है, निरंतर है और बदलता जा रहा है तेरी भी भाँति । किंतु तू तो उसे नहीं पाता ? सारा संसार जाग उठना चाहता है। अध्यात्मवाद की तपिश में हड्डीयाँ आज चटक जाना चाहती है क्योंकि बोलते पत्थरों की भूख की मर्यादा ले लिए मनुष्य एक दिन अपने मनुष्यत्व को पावों से कुचलने के लिए तैयार हो गया था और उसने उन्हें अपने जीवन की चरम आसक्ति समझकर जिसकी एक खंड को गौतम समझकर, जिसके एक खंड को गौतम बनाया था, उसके दूसरे खंड को बंदीगृह की कठोरतम प्राचीन बनाया । ''[६] यहाँ स्पष्ट है लेखक ने वहाँ के पहाडी आंचल की स्थिति का चित्रण किया है।

'कार्तिकेय' कहानी में पर्वतांचल में रहनेवाली विभिन्न जातियों के नेतृत्व, एकता, संघटन का चित्र खिंचा है। प्रजापति दक्ष के यज्ञ विध्वंस के बाद देवता महादेव के उपासकों का सम्मान बढने पर भी विभिन्न जातियों में एकता नहीं है। देव तथा अन्य जातियाँ का उनसे अलग–अलग रहने का विवेचन है। '' देव तथा अन्य जातियाँ उनसे कुछ अलग–अलग–सी रहती, और जृम्भक, वसु तथा रुद्र इत्यादी गण अपने प्राचीन विश्वासों को लिए हुए कट्टरता से उन्ही के साथ रहते । उनकी प्रबल शक्ति को देखकर भी देव, यक्ष गंधर्व, किन्नर, सिध्द् दक्षिण पूर्व के नाग सभी उनसे अलग रहते । '' [६] इससे यह स्पष्ट है, उनके जीवन की नीरसता, उनका अपना अहं, दम्भ आदि के कारण भिन्नता और वैष्यमता का चित्रण देखने मिलता है। साथ ही तत्कालिन देव–दानवों के घात–प्रतिघातों और संघर्षों को लेखक ने तटस्थ दृष्टिकोण से देखा है।

लेखक ने देव और दानव के संघर्ष द्वारा असूरों की ताकत को प्रस्तुत किया है और देवतों का पराजय क्योंकि देवी–देवताओं में अविर्भाव है । मात्र आज देवताओं का नेतृत्व, संगठन और एकता–एकजुट अर्थात रक्षा की व्यवस्था की अपेक्षा चित्रित है। इस प्रकार यह कहानी ऐतिहासिक यथार्थ को वर्तमान संदर्भों में प्रस्तुत करती है। यहाँ मानव पर्वतांचल के सभी मामलों पर दृष्टि डालने का उद्देश्य रहा है।

डॉ. रांगेय राघव की 'मृगतृष्णाः दीर्घकथा' कहानी सामाजिक संबंध और सामुहिक संवेदना को प्रतीकात्मक रुप से व्यक्त करती है कि जिसके द्वारा पर्वत की रंगीन दीप्त और हिरनी की महत्वाकांक्षाओं को व्यक्त किया है। '' पर्वत के इस शिखर पर भाँति–भाँति के रंगीन दीप्त पत्थर थे । हिरनी ने देखा तो देखती ही रह गई । सुन्दर झरने झर रहे थे । हिरनी ने झुककर पानी पिया, और तब कहा, 'निर्झर! तेरा पानी कितना ठंडा है।' ––– पृथ्वीपर कैसे–कैसे पदार्थ है, उसने सोचा, जिनसे प्राणों का पालन होता है। ''[८] यहाँ यह सच है कि डॉ. रांगेय राघव पर्वतांचल में हिरनी के मनोभाव, सुंदर निर्झर आदि का सार्थक चित्र खिंचने में सफल हुए है।

* निष्कर्षतः

भारतीय भूखंड के विभिन्नता में पहाडी जन जीवन उन्नीसवी सदी की उपलब्धि है। काफी दिनों से आज भी पहाडी जन जातियों का कष्टप्रद जीवन, उनका जीवन दृष्टिकोण, वहाँ की संस्कृति, वहाँ का लोकजीवन, वहाँ की बोली, वहाँ के अंधविश्वास, अज्ञान रीति–रिवाज, उत्सव–पर्व, नाच–गान, उनके उदयोग धंदे, उनके शोषण, उनकी पारिवारिक जीवन पध्दति सामुहिकता, धर्म परिवर्तन और भौतिक सुविधाओं के अभाव के कारण आज भी वे पिछडे है। आज भी पहाडी जन जीवन में सुविधाओं के साधनों की कमियाँ है। ये जन जातियाँ विकास की सुविधाओं से आज भी अधिक से अधिक दूर रही है। रास्ते, गाडियाँ, बिजली, सुरक्षा, नौकर, नौकरी में आरक्षण, कृषि विकास, बीज, नये औजार, आर्थिक सहायता, चिकित्सालय की सुविधा, पीने के पानी की सुविधा, भूमिदान योजना, औद्योगिककरण, कुटीर उदयोगो को प्रोत्साहन, नौकरी में उपाधि, राजनिती में प्रवेश और आरक्षित जगहों की कार्यवाही न करना तथा सरकार और राजनिती के षडयंत्र के कारण पहाडी लोंगो के सामने अनेक समस्याएँ निर्माण होने के कारण वे असफल रहे है।

पहाडी जन जीवन के विकास के साधनों में शिक्षा प्रसार , नये तंत्रज्ञान का ज्ञान आर्थिक योजनों की पूर्ति, उन लोंगो की रक्षा, भौतिक सुविधाओं का परिज्ञान उन्हें देना अनिवार्य लगता है। इस जैसे प्रयास करते पर ही उनकी स्थिति–गति तथा जीवनयापन में सुखावह परिवर्तन होता रहेगा ।

डॉ. रांगेय राघव ने पहाडी आंचल का वर्णन 'अंगारे न बुझे' में भीतरी व्यथाओं ' सारनाथ के 'खंडहरों में' मुर्तिकार की आसक्ति, 'कार्तिकेय' में विभिन्न जातियों के नेतृत्व, वैष्यमता, 'मृगतृष्णाः दीर्घ कथा' मे हिरनी के मनोभाव और निर्झर का वर्णन है ।

* संदर्भ सूची –

१) डॉ. रामपत यादव – 'उपन्यास का आंचलिक वातायन', पृ. ९५
२) राजनाथ शर्मा – 'साहित्यिक निबंध (आंचलिक उपन्यास), पृ. ९३१
३) डॉ. रामपत यादव – 'उपन्यास का आंचलिक वातायन', पृ. ६८
४) डॉ. रांगेय राघव – 'अंगारे न बुझे', पृ. १६१
५) डॉ. रांगेय राघव – 'अंगारे न बुझे', पृ. १७३
६) डॉ. रांगेय राघव – 'सारनाथ के खंडहरों में', पृ. २९६
७) डॉ. रांगेय राघव – 'कार्तिकेय', पृ. २३६
८) डॉ. रांगेय राघव – 'मृगतृष्णा', पृ. ३२७